विश्व की कहानी

विश्व की कहानी

•

डॉ० एस० पी० खत्री

•

लोक-शिक्षण-पुस्तक-माला, संख्या—४

प्रकाशक

भारती-भण्डार

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

संस्करण : १९८०

मूल्य ३.००

मुद्रक

लीडर प्रेस, इलाहाबाद

दो शब्द

बालकों के लिए पुराण, इतिहास आदि की कहानियों और लोक-कथाओं को लेकर हमारे यहाँ से अनेक विद्वानों की लिखी सुन्दर पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इधर हमने लोक-शिक्षण-सम्बन्धी सुन्दर सचित्र पुस्तकें प्रकाशित करने का विचार किया है। उसी के अन्तर्गत डॉ० एस० पी० खत्री ने कुछ सुन्दर पुस्तकें लिखी हैं, जिनमें हमारे जल, थल, आकाश और विश्व के आदिम विकास पर बहुत ही सरस पद्य-बद्ध पुस्तकें हैं। 'विश्व की कहानी' उन्हीं में से एक है। विश्वास है कि बालकों और प्रौढ़ों के लिए यह लोक-शिक्षण-माला बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

—प्रकाशक

विश्व की कहानी

आओ भैया तुम्हें सुनायें,
सुन्दर एक कहानी।
मगर नहीं राजा रानी की,
पर है बहुत पुरानी।
जिस दुनिया में हम रहते हैं,
वह है बड़ी निराली,
कैसे बनी ? बसी यह कैसे ?
करे कौन रखवाली ?

युग-युग बीते सदियाँ बीतीं,
वर्ष करोड़ों बीते।
फिर भी अब तक बना हुआ है,
जग, सब का मन जीते।
नहीं कहीं जंगल पहाड़ थे,
नदियाँ कहीं नहीं सागर।
नहीं कहीं थे महल-दुमहले,
कहीं नहीं नारी नर।

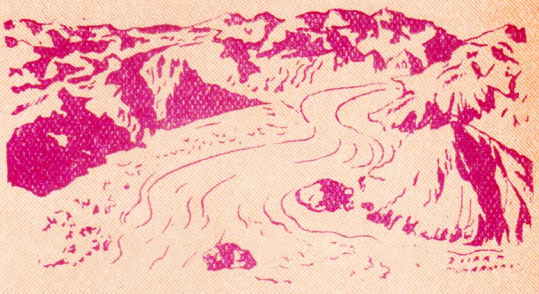

गंगा जमुना सिंधु नर्मदा,
ब्र ह्म पु त्र का वे री।
विन्ध्य हिमालय निलगिरी की,
चो टी न हीं घ ने री,

चाँद सप्तऋषि कहीं नहीं थे,
क हीं न हीं ध्रु व ता रा।
कहीं नहीं तारों की माला,
सू ना वि श्व ह मा रा।

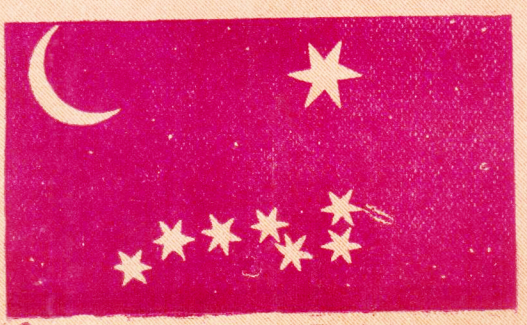

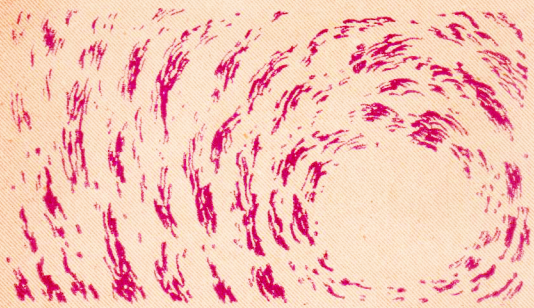

इस सूनेपन में फैला था,
गर्मी का विस्तार।
गर्मी बहुत गजब की थी,
जिसका आर न पार।

जैसे धुँआ उठे जंगल में,
जभी आग लग जाये।
सारे आसमान को छा ले,
इधर उधर मँडलाये।

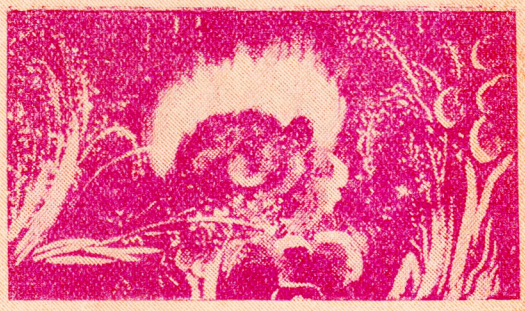

उसी तरह गर्मी की लहरें,
लाल ! आग-सी लाल।
इधर - उधर मँडलाती जातीं,
चलें प्रलय की चाल।

सब कुछ पिघला-पिघला-सा था,
गर्मी थी घन घोर।
मानो लाखों सूरज मिलकर,
जलते हों हर ओर।

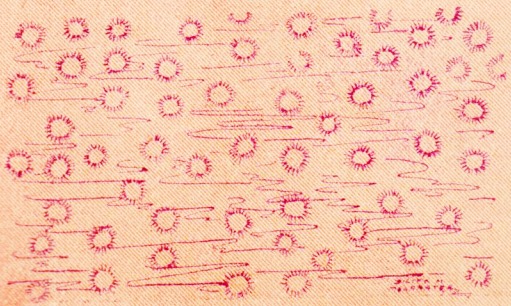

इस पिघली ज्वाला की लपटें,
फैली थीं हर ओर।
लाल-लाल लपटों की होली,
जिसका ओर न छोर।

इन लपटों में छिपी शक्ति जो,
करती कौंध किल्लोल।
कहीं कड़कती, कहीं भड़कती,
अपनी बोली बोल।

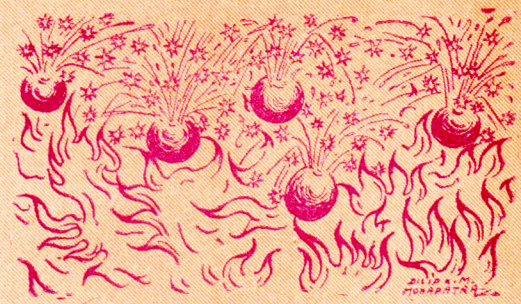

गर्मी की लपटें करवट ले,
आपस में टकरातीं।
जिनसे फूट आग के गोले,
फुलझड़ियाँ बन जातीं।

इस गर्मी की धू-धू में से,
एक भाप-सा गोला।
टूटा, ठिठक गया अपने से,
बाहर भीतर पोला।

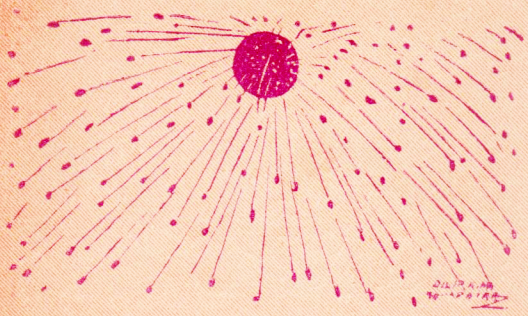

किस गति से वह टूटा होगा,
इसको कौन गिनाए।
पल-पल में लाखों मीलों की,
दौड़ कौन समझाए।

ज्यों ही इस विशाल गोले ने,
नया ठिकाना पाया।
लाखों पिघली दीप-शिखाओं,
को उसने भरमाया।

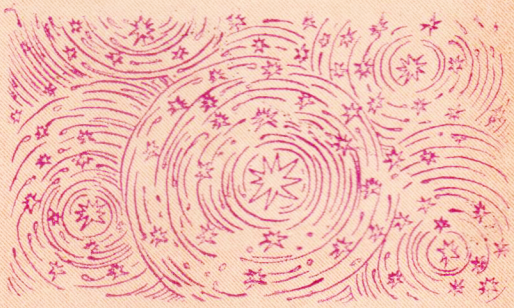

दीप-शिखायें चक्कर लेतीं,
शोलों को बिखरातीं।
बिखर बिखर करये फुलझड़ियाँ,
चक्कर स्वयं लगातीं।

इस विशाल गोले को हमने,
अपना सूर्य बनाया।
उसके ज्योतिपूर्ण जीवन से,
नव-ग्रहों की काया।

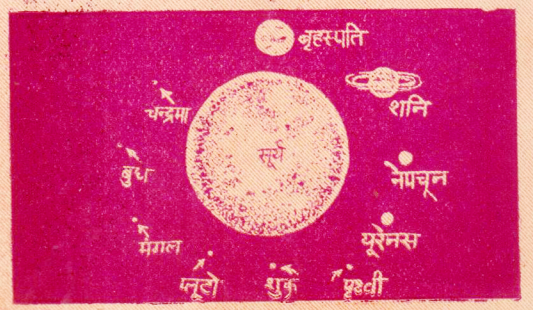

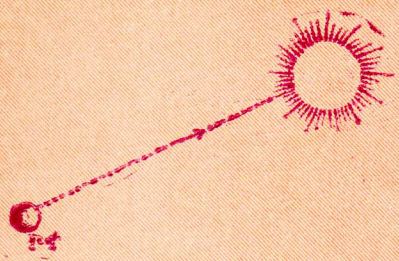

क्या है सूरज ? कितना ऊँचा ?
कितनी है गोलाई ?
क्या उसकी गति ? क्या है भीतर ?
कितनी गर्मी छाई ?

दस करोड़ मीलों की दूरी
पर सूरज रहता है।
कई लाख घन गर्मी अपने,
हिय में वह रखता है।

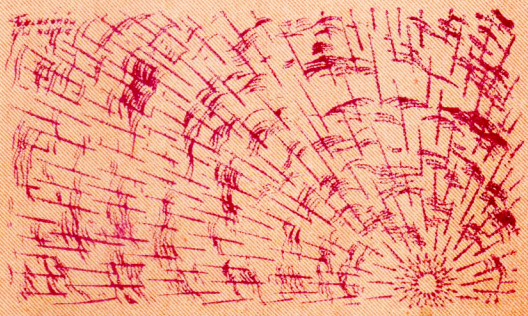

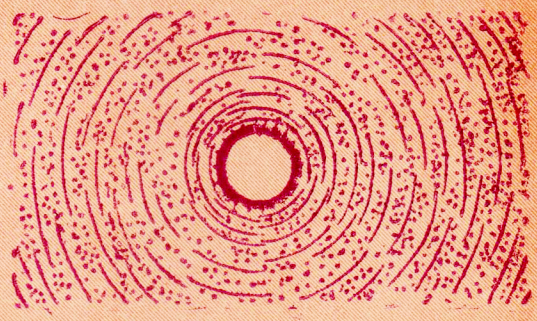

चक्कर लगा लगाने सूरज,
अपनी धुरी बनाये।
इस चक्कर में लगे टूटने,
कुछ हिस्से ठण्डाये।

इन भागों ने टूट टूट कर,
अपनी धुरी बनाई।
यही नव-ग्रह कहलाते हैं,
गति विशेष है पाई।

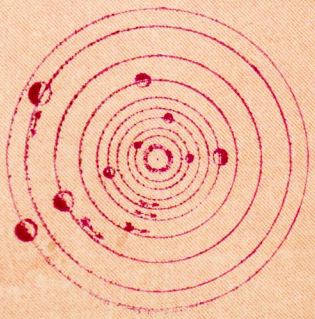

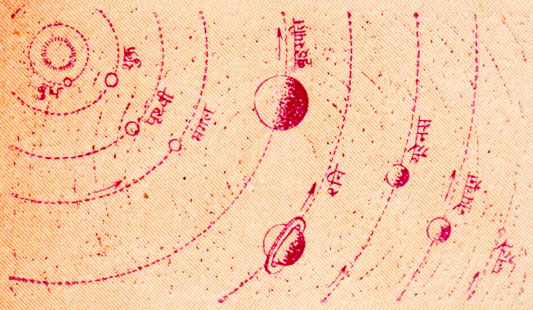

सभी घूमने लगे सूर्य के
ऐसा समा निराला।
सभी बँधे आकर्षण से थे,
ज्यों मोती की माला।

ये ग्रह दूर नहीं पृथ्वी से,
हमें दिखाई देते।
दूरबीन से साफ दिखेंगे,
इनको हम गिन लेते।

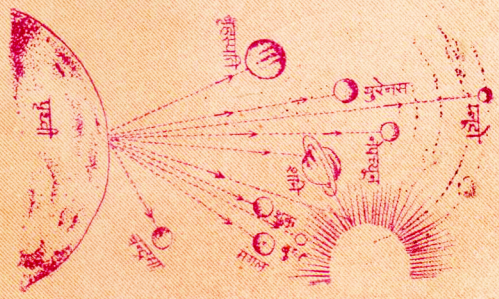

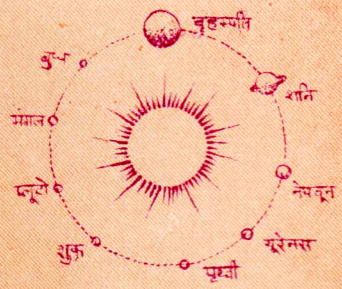

नव-ग्रहों में नहीं रोशनी,
सूर्य इन्हें चमकाता।
अपनी ज्योति इन्हें देता है,
जगमग इन्हें बनाता।

कहते इन्हें सूर्य-मंडल हम,
जो पृथ्वी के पास।
इसी सूर्य-मंडल की गति से,
ज्योतिष करे विकास।

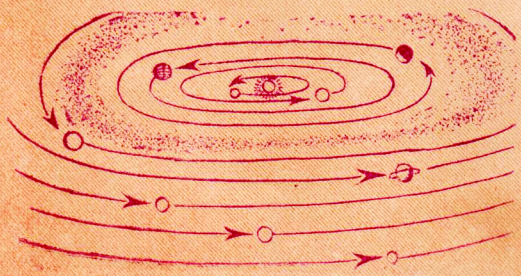

वयस्कों तथा बालकों के उपयुक्त सचित्र पुस्तकें

पुराण की कथाएं	३.००	महाभारत की कथा	३.००
नीति-कथा (पंचतंत्र से)	३.००	सिंहासन बत्तीसी	४.००
सुमंगला (कथा सरित्सागर से)	३.००	अकबर-बीरबल-विनोद	३.००
सात कहानियां (अलिफलैला से)	३.००	अशोक माला (कथा सरित्सागर)	३.००
हातिमताई (कहानियां)	३.००	विश्व की कहानी (कविता)	३.००
कपड़े की कहानी (कविता)	३.००	इक्का, तांगा, मोटर	३.००
हमारी नाव चली	३.००	बाबूजी जिन्दाबाद (एकांकी)	३.००
अपना देश बहुमुखी परिचय	३.००	बाल्मीकि रामायण सार	
भगवान राम की कथा	३.००	ले., डा. धीरेन्द्र वर्मा	५.००

भारती भंडार

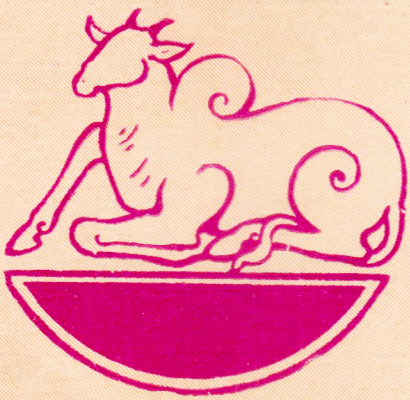

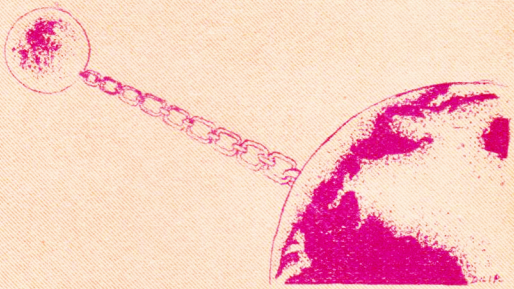

चुंबक की-सी एक शक्ति से,
बँधा विश्व है सारा।
वही शक्ति जीवन देती है,
इ स से जी व न प्या रा।

इसी एक सिद्धांत सहारे,
वि क सि त विश्व ह मा रा।
इसी विश्व के हम प्राणी हैं,
वि श्व ह मा रा न्या रा।

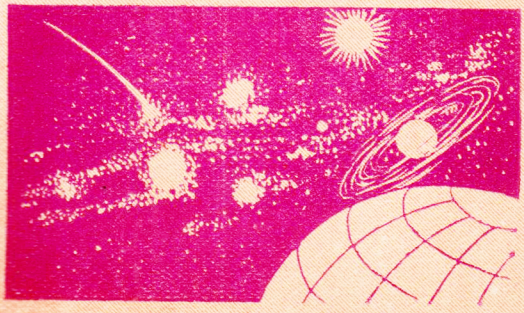

भारत के पुराण कहते हैं,
शेष नाग रखवारे।
अपने फन पर इसे लिये हैं,
वही विश्व यह धारे।

पर विज्ञान यही बतलाता,
यही सही भी मानो।
आकर्षण की शक्ति निराली,
भैया! यह पहचानो।

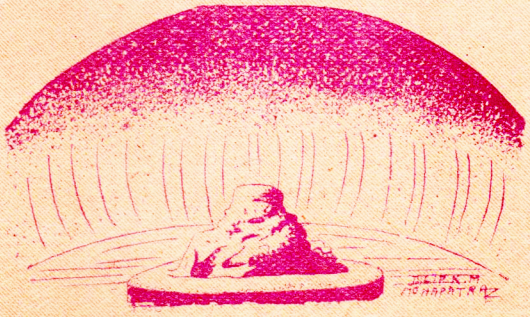

यूनानी यह भी कहते थे—
एटलस देव महान्!
कंधे पर पृथ्वी को साधे,
बैठे करते ध्यान।

कहते मुसलमान ईसाई,
प्रभु ने विश्व बनाया।
जल-थल, अम्बर, सबको उसने,
अपने हाथ सजाया।

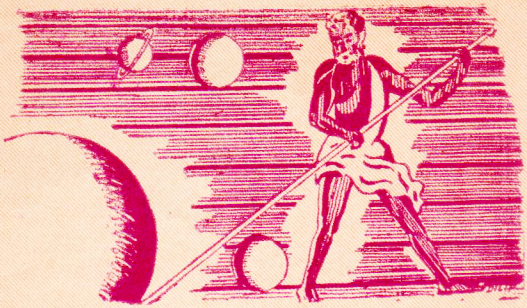

कैसे विश्व बना यह सारा ?
सबको बड़ा अचम्भा।
यूनानी कहते थे उसको,
रहे संभाले खम्भा।

'हरकुलीज़' के 'बारह खंभे',
इसको खड़े संभालें।
इसीलिए यह सधा हुआ है,
निश्चित इसकी चालें।

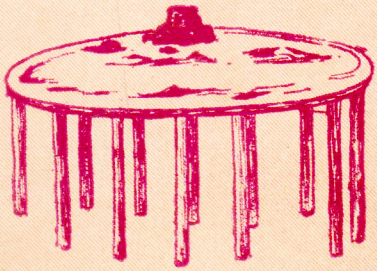

दूर जहाँ तक देख सके हम,
बना वहीं आकाश।
और हवा से घिरा हुआ जो,
जिसका नहीं विनाश।

आकर्षण की शक्ति क्यों है,
सूरज चाँद सितारे।
जिनकी सुन्दरता लखने से,
कभी नहीं मन हारे।

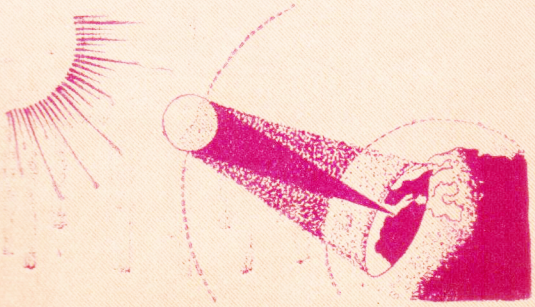

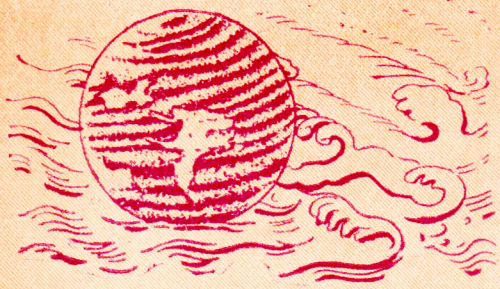

पृथ्वी की ठंडक सिकुड़न ने,
धीरे - धीरे जन्म दिया।
अंध प्रशान्त हिन्द से सागर,
सबने उससे जन्म लिया।

धीरे - धीरे गया निखरता,
नये विश्व का रूप।
सूरज चाँद सितारे सागर,
नदी झील और कूप।

चक्कर लेते पृथ्वी ठण्डी,
सिकुड़ी बनी कठोर।
गड्ढे टीलों को बनवाती,
होता कहीं न शोर।

जिन जगहों से चिप्पड़ टूटे,
सागर बने, पहाड़।
ज्वालामुखी कहीं पर फूटे,
इसी ठण्ड की आड़।

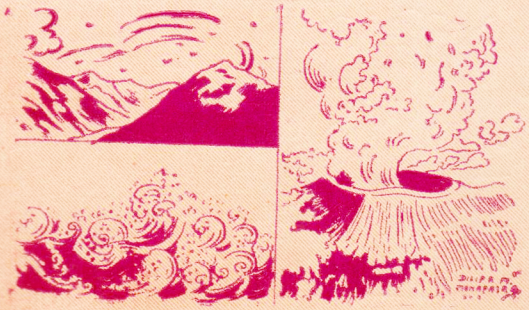

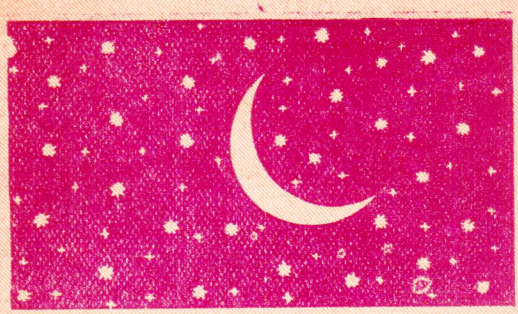

और चाँद भी लगा नाचने,
पृथ्वी ही के साथ।
लगे नाचने हीरक तारे,
लिये हाथ में हाथ।

सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी और तारे,
एक शक्ति के हाथ।
होते हुए अलग औ न्यारे,
बँधे साथ ही साथ।

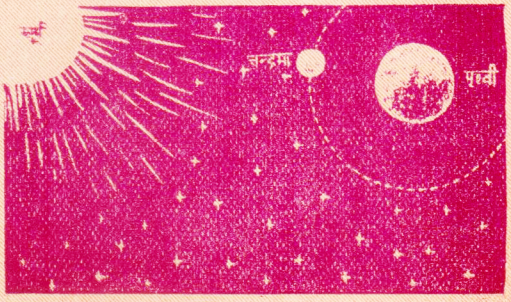

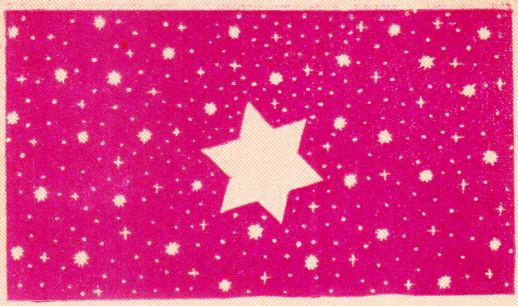

बीचों बीच रहे ध्रुव तारा,
नहीं लगाता फेरा।
इसके चारों ओर लगा है,
नक्षत्रों का डेरा।

फेरा लगा-लगा पृथ्वी ने,
टुकड़ा एक छिटकाया।
छिटक दूर वह लगा नाचने,
प्यारा चाँद कहाया।

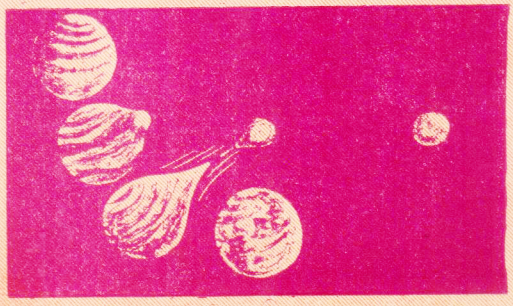

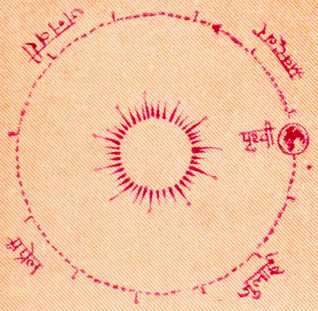

सवा तीन सौ चौंसठ दिन में,
पूरा चक्कर लगता।
इस चक्कर के पूरा होते,
एक साल था बनता।

अपनी धुरी घूम जब पृथ्वी,
चक्कर एक लगाती।
चाबिस घण्टे पूरा करती,
दिन और रात बनाती।

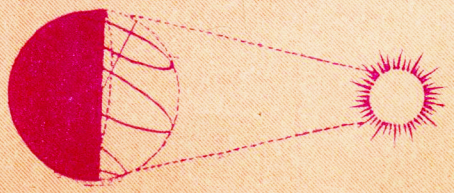

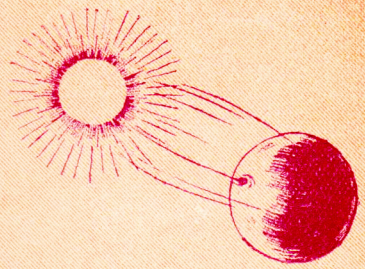

युग-युग बीते इसी सूर्य से,
छिटकी एक चिनगारी।
लगी काटने वह भी चक्कर,
पृथ्वी यही हमारी।

लगी लगाने पृथ्वी चक्कर,
डाल सूर्य का घेरा।
अपनी धुरी बना ली उसने,
लगी लगाने फेरा।

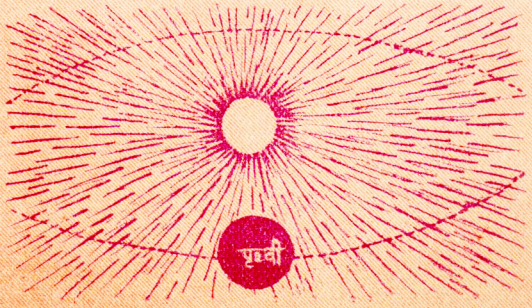

'मीन', 'मेष', 'वृश्चिक' सम हमको,
कुछ दिखलाई देते।
'कुम्भ', 'सिंह', 'कन्या' समान कुछ,
दूर दिखाई देते।

ये नक्षत्र घूमते रहते,
ध्रुव पर आँख लगाये।
समय-समय पर इधर-उधर ये,
अपनी ज्योति जगाये।

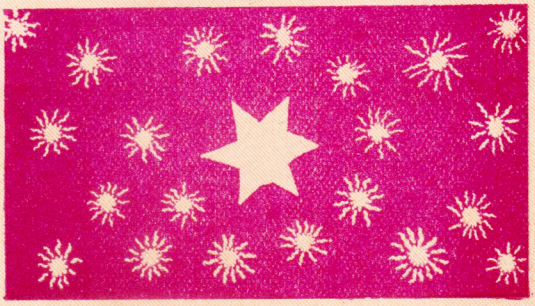

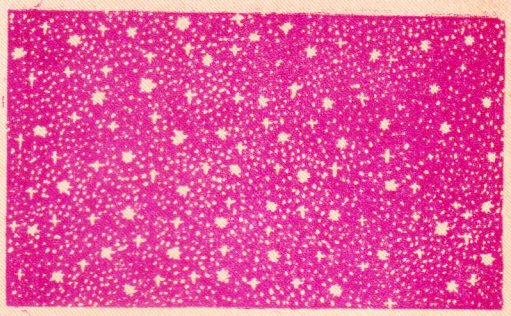

वे हैं इतनी दूर यहाँ से,
छोटे हमें दिखाते।
एक दूसरे से आकर्षित,
कभी न गिरने पाते।

सचमुच में नक्षत्र हमारे,
बने बहुत तारों से।
इसीलिए दिखलाई देते,
हैं कुछ आकारों से।

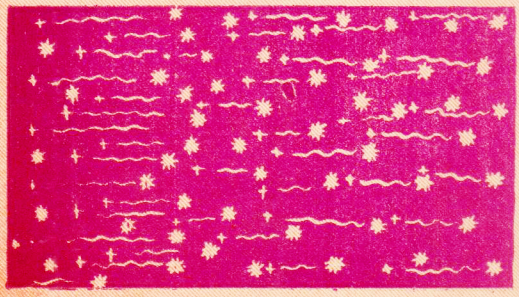

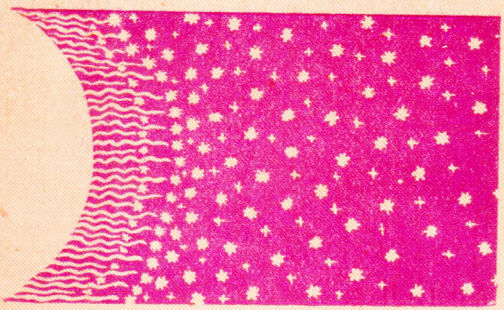

जैसे सूरज छिटक पड़ा था,
वैसे छिटके तारे।
इन तारों को कौन गिनेगा,
बने सूर्य ये सारे।
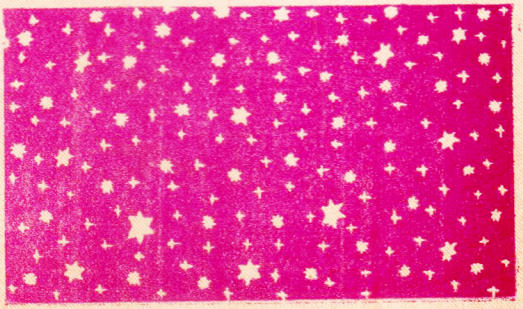
ये तारे जो हमें दिखाते,
अपनी ज्योति निराली।
लाखों गुना बड़े सूरज से,
नहीं ज्योति से खाली।